Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
May 2024 5(5), 816-820

दिल्ली राज्य के माध्यमिक स्तर के छात्रों के मूल्यों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

रिकी[1], डॉ. कविता शर्मा[2]

[1] शोधार्थिनी, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ.
[2] अस्सिटेट प्रोफेसर,,शिक्षा संकाय, मंगलायतन विश्वविद्यालय,अलीगढ. (उ.प्र.)

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.4608

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

अभिभावक को उपेक्षा की स्थिति से उबारने के लिए ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो जीवन के प्रत्येक पहलू की जानकारी प्रदान करे, ये वर्तमान समय की यह आवश्यकता है कि अभिभावक की दिशा में राष्ट्रीय स्तर पर ठोस प्रयास किये जायें, जिससे सभी वर्गो का संतुलित विकास संभव हो सके।माध्यमिक स्तर के छात्रों को योग्य बनाने का वास्तविक अर्थ उसे प्रगति शील और सभ्य बनाना है ताकि उसकी तर्क–शक्ति का विकास हो सके। छात्र की समस्या समाधान उसके परिवार के समुचित विकास, बेहतर समायोजन, उत्तम जीवन संतुष्टि तथा सुदृढ़ता के लिए आवश्यक है।मूल्य किसी भी व्यक्ति के व्यवहार के मुख्य निर्धारक होते हैं। ये व्यक्ति के आन्तरिक जीवन का भाग होते हैं तथा उसके व्यवहार द्वारा परिलक्षित होते हैं। विभिन्न प्रकार के मूल्य जैसे धार्मिक, सैद्धान्तिक, नैसर्गिक आदि, व्यक्ति के व्यवहार में अभिप्रेरक बल की तरह कार्य करते हैं। मूल्य के सिद्धान्त को विशिष्ट तौर पर परिभाषित नहीं किया जा सकता। प्रत्येक व्यक्ति के पास अपने अनुभव होते हैं। जो समय के परिवर्तन के साथ बढ़ते जाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने आचरण व अनुभवों के आधार पर अपने जीवन में कुछ नियम या सिद्धान्त बना लेता है तथा वे भी उसके जीवन का दर्शन बनकर जीवन पर्यन्त उसके साथ चलते हैं। जीवन के यही दर्शन उसे जीवन पथ पर निरन्तर गतिशील रखते हैं और कार्य करने की ओर अभिप्रेरित करते हैं।

Keywords: मूल्य, शैक्षिक उपलब्धि।

1. प्रस्तावना

भारतीय जीवन दर्शन, भारतीय मनोविज्ञान तथा भारतीय समाजशास्त्र जैसे साहित्य में नैतिकता व आध्यात्मिकता संबंधित ज्ञान भरा पड़ा है, साथ ही भारतीय चिंतन पर आधारित जीवन–यापन करने वाले भी व्यक्ति भारत में हैं जो एक प्रकार से व्यावहारिक जीवन का आदर्श प्रस्तुत करते हैं। इसके परिणामस्वरूप आज विश्व में सुख एवं शांति स्थापित करने के लिए अनेक देश भारत की ओर निहार रहे हैं और संभवतः भारत से उनकी यह अपेक्षा भविष्य में पूरी होगी। पर फिर भी सामान्यतया भारत में व्यक्ति का स्वयं में तथा परिवार, पडोस, कार्यस्थल, नगर, जाति, समाज, देश तथा विश्व में आज ऐसा अनुचित व्यवहार देखने को मिलता है कि भारतीयों तथा अन्य देशों के निवासियों को निराशा हाथ लगती है। उन्हें भारतीय जीवन के आदर्श तो श्रेष्ठ लगते हैं पर भारतीयों का व्यवहार देखकर तथा अनुभव कर आश्चर्य मिश्रित घृणा होती है। एक संस्था के रूप में : विवाह में वर कन्या का ही गठबन्धन नही होता, दो परिवार भी आपस में बँधते है। एक दूसरे के सहयोग–परामर्श से अपनी कठिनायों से निपटने और उन्नति की दिशा में बढ़ने का प्रयत्न करते है। दो पड़ौसी परस्पर सहानुभूति के आधार पर मित्र बन जाते है और दुःख बँटाने, सुख बाँटने में यथासम्भव सहायता करते है तो कोई कारण नही कि कन्या और वर के परिवार मिल–जुलकर एकता स्थापित न करें। विवाह पति–पत्नी के बीच ही नही होता वरन् दो परिवारों के बीच समन्वय,समायोजन एवं सामाजिकता को बढ़ाना है। पारिवारिक समायोजन बनाये रखने में सभी सदस्यों का योगदान रहता हैं।

परिवार में नारी के रूप में मां की कोमल भावनाओं, संवेदनाओं एवं सन्तान के प्रति त्याग हमेशा घर के सदस्यों को एक साथ जोड़े रहता है। पुरूषों को अधिकतर समय घर के बाहर ही बिताना पड़ता है। अतः पुरूष बहारी दुनिया को अच्छी तरह देखने एवं परखने का अपना अनुभव रखता है जबकि महिलाओं को घर और बच्चों के दैनिक कार्यो से समय कम मिलता है।

मूल्यों का वर्गीकरणः–नागरिक मूल्य– नागरिक शास्त्र के सुसंगठित तथा सुनियोजित प्रस्तुतिकरण नागरिकों द्वारा शिक्षक प्रजातन्त्र की रक्षा व उसे पुष्ट करने की भावनाऐं उत्पन्न कर सकते हैं देश के अधिकारियों के कर्तव्यों व अधिकारों पर व्यापक चर्चा की जा सकती है। जिससे विद्यार्थियों के लिए एक आचार संहिता भी विकसित की जा सकती है।

2. अभिभवक–छात्र के सम्बन्ध

बच्चों का व्यक्तित्व जिस दिशा में भी मुड़ता है और जैसा भी बनता है, यह उनके अभिभावकों पर ही निर्भर है। यह निमार्ण किन्ही विशेष प्रयत्नों, रोक–टोक और सुझाव एवं निर्देशों के द्वारा नही आते बल्कि अभिभावकों के आचरण और व्यवहार के प्रभाव से बच्चों में प्रवेश करते हैं। बच्चों का मन एक कोरे कागज की तरह माना जाता है जिस पर जो चाहा लिखा व जैसा चाहा अंकित किया जा सकता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक आर्थर डिंग्ले के अनुसार –''बालक उस पर अमल नही करता जो कुछ आप कहते है, बल्कि वह तो उससे सीखता है जो आप करते है।'' अतः यह स्पष्ट है कि परिवार का वातावरण अनिवार्य रूप से बच्चों को प्रभावित करता है। घर के लोगों का स्वभाव बच्चें के व्यक्तित्व को असाधारण रूप से प्रभावित करता है तथा घर का वातावरण उसको अपने अनुरूप ढाल लेता है। यही कारण है कि इतिहास में जितने भी महापुरूष हुए है, उनमें कुछ को छोड़ दे तो लगभग सभी अपने माता–पिता से ही प्रभावित हुए हैं। अभिभवक–छात्र के सम्बन्धों और समस्याओं के अध्ययन से नई पीढ़ी और सामाजिक कार्यकर्ताओं को भी लाभ हो सकता है। छात्र उन्हें अपना शुभचिन्तक मानकर उनकी देखभाल करे और उनके अनुभवों से जीवनयापन का ढंग सीखें।

अभिभवक शान्त, धैर्य, और समर्पण का अनोखा प्राणी होता है। वह कम–से–कम आवश्यकताओं की पूर्ति कर परिवार को दिशा देता है ताकि समाज के द्वारा शिक्षा का प्रचार और प्रसार निर्बाध गति से चलता रहे।

(i) राजनैतिक मूल्य – इसके अन्तर्गत राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय भावना जैसे मूल्य समहित होते हैं सामाजिक दायित्व आदर्श, नागरिकता, प्रजातन्त्र और मानववाद आदि मूल्य समाज एवं राजनीति दोनों को स्पर्श करते हैं। वस्तुतः सामाजिक परिस्थितियां ही मनुष्य के दूरदर्शिता पूर्ण बुद्धिवादी रवैये के निर्माण को प्रभावित करती है।

(ii) आर्थिक मूल्य– इसके अन्तर्गत मांग व पूर्ति में समन्वय कीमत निर्धारण, मुद्रा प्रसार, बजट हड़ताल व श्रमिक असन्तोष,नियोक्ता सम्बन्ध आदि प्रकरणों को बढ़ाते समय अनेक मूल्य विकसित, करने की कोशिश कर सकते हैं।

(iii) सामाजिक मूल्य– इसके अन्तर्गत शिक्षक विद्यार्थियों को विभिन्न जातियों के लोगो के साथ रहना तथा साथ–साथ मिलकर अपने भोजन, वस्त्र तथा घर आदि की व्यवस्था करने का पूर्ण रूप से अधिकार है।

(iv) संस्कृति मूल्य– नागरिकों की भिन्न–भिन्न संस्कृतियों की जानकारी तथा विद्यार्थियों में समय की मांग के अनुरूप रीति–रिवाजों में उचित परिवर्तन करने की तत्परता भी विकसित कर सकते हैं।

भारतीय संस्कृति में विभिन्न मूल्यों के बारे में वर्णन आता है, प्रस्तुत शोध अध्ययन में मानव जीवन से सम्बन्धित दस मूल्यों के बारे में अन्वेषण किया गया है वे मूल्य निम्न प्रकार से हैं – i) धार्मिक मूल्य, ii) सामाजिक मूल्य, iii) प्रजातान्त्रिक मूल्य, iv) सौन्दर्य परक मूल्य, v) आर्थिक मूल्य, vi) ज्ञानात्मक मूल्य, vii) सुखवादी मूल्य, viii), सामर्थ्य मूल्य,

पारिवारिक प्रतिष्ठात्मक मूल्य (Family-Prestige Value)

1. स्वास्थ्य मूल्य (Health Value) : – धार्मिक मूल्य (Religious Value)– यह मूल्य परमात्मा में आस्था के रूप में विभक्त किया जा सकता है। उसे जानने के प्रयासों में भी धार्मिक मूल्य प्रदर्शित होते हैं। दैवीय भय निरर्थक है। धार्मिक पुस्तकों में उस परमात्मा के निकट जाने के सूत्र अंकित हैं।

2. सामाजिक मूल्य (Social Value)– यह मूल्य दान की सहायता से अभिव्यक्त किया जा सकता है लोगों के प्रति प्रेम और सहानूभूति, सेवा के लिये प्रयासरतः ईश्वरीय सम्पन्नता द्वारा मानवता की सेवा।

3. प्रजातान्त्रिक मूल्य (Democratic Value)– यह मूल्य व्यक्तिगत सम्मान दयालुता धार्मिकता और पारिवारिक स्तर द्वारा वर्णन किया जा सकता है।

4. सौन्दर्यपरक मूल्य (Aesthetic Value)– इस मूल्य को सुन्दरता की विवेचना द्वारा वर्णित किया जा सकता है। सम्बंध और सहस्वरता कला के लिये प्रेम कला, पेन्टिंग, संगीत, नृत्य, काव्य और वास्तु कला साहित्य के प्रति प्रेम ग्रह सज्जा के प्रति प्रेम के द्वारा सौन्दर्य परक मूल्यों को दर्शाया जा सकता है।

5. आर्थिक मूल्य (Economic Value)– यह मूल्य माल की प्राप्ति और धन की इच्छा पर आधारित है। एक उच्च आर्थिक मूल्य वाला व्यक्ति मार्गदर्शित यह सहमति देता है कि सेवा की इच्छा में उसे धन माल की प्राप्ति होनी चाहिए।

6. ज्ञानात्मक मूल्य (Knowledge Value)– यह मूल्य प्रेम और सत्य की खोज के प्रेम और ज्ञान के भौतिक सिद्धान्तों की किसी भी गतिविधि की खोज पर आधारित है। एक ज्ञानवान व्यक्ति आवश्यक कार्यों की सफलता में निम्न भौतिक सिद्धान्तों के ज्ञान को भी स्वीकार करता है।

7. सुखवादी मूल्य (Hedonistic Value)– यहाँ पर इस मूल्य का यह तात्पर्य है कि यह मूल्य दर्द को दूर करने इच्छात्मक प्रेम पूर्वक आनन्द प्रदान करता है। एक सुखवादी के लिये भविष्य से अधिक महत्वपूर्ण वर्तमान होता है।

8. सामर्थ्य मूल्य (Power Value)– इस मूल्य का तात्पर्य सभी के ऊपर इच्छात्मक शासन करना और दूसरों का नेतृत्व करना भी है। उच्च सामर्थ्य मूल्य व्यक्ति का यह लक्षण है कि वह एक नौकरी को महत्व देता है जहाँ पर सभी के ऊपर कार्य करने के अवसर प्राप्त करता है वह एक छोटे स्थान पर शासन करना पसंद करता है, न कि किसी बड़े स्थान पर सेवा देना।

9. पारिवारिक प्रतिष्ठात्मक मूल्य (Family-Prestige Value)– इस मूल्य का यह तात्पर्य है कि वास्तव में यह इच्छात्मक व्यवहार है, पारिवारिक स्तर के अनुसार कार्य और सम्बंध होने चाहिए। यह भारतीय समाज का विभिन्न जातियों के पारम्परिक आधार पर सम्मान का संकेत करता है। यह यह दर्शाता है कि निर्धन परिवारों का अन्तरजातीय विवाहों मे परित्याग कर दिया जाता है।

10. स्वास्थ्य मूल्य (Health Value) – इस मूल्य की यह मान्यता है कि शरीर को सामान्य कर्त्तव्य और कार्य को करते हुए उचित बनाये रखना चाहिए। यह यह संकेत करता है कि आत्म संरक्षण को संजोकर रखना चाहिए एक उच्च स्वास्थ्य मूल्य परक व्यक्ति यह अनुभव करता है कि शाारीरिक स्वास्थ्य योग्यताओं के विकास का प्रयोग करने के अत्यन्त आवश्यक है।

3. शैक्षिक उपलब्धि पर मूल्यों का प्रभाव

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य विद्यालय में चयनित विषयों में संतोषजनक उपलब्धि प्राप्त करना। किसी छात्र के विद्यालय के विषयों में प्राप्त उपलब्धि का पता एक लिखित प्रमाण–पत्र के रुप में चलता है। जो विद्यालय में पढ़ाए गए विषयों जैसे– अंग्रेजी, हिन्दी, विज्ञान, कला, संस्कृत गणित आदि के मूल्यांकन के द्वारा किया जाता है। एक छात्र के लिए यह एक प्रमाण–पत्र एक वर्ष की मेहनत का परिणाम होता है। छात्र को यह प्रमाण–पत्र विषयों की लिखित परीक्षा के साथ–साथ उसकी उपस्थिति, मानसिक स्तर तथा पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने के उपरान्त प्राप्त होता है। वर्तमान समय में विद्यालयों के द्वारा छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाने के लिए ऑफलाइन, ऑनलाइन, त्रैमासिक, छमाई तथा वार्षिक आधार पर परीक्षा में माध्यम से मूल्यांकन किया जाता है।

कुछ विद्यालयों में मौखिक, लिखित तथा भाषा का मूल्यांकन किया जाता है। सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों का मूल्यांकन तिमाई, छमाई तथा वार्षिक आधार पर किया जाता है। इस मूल्यांकन में सफलता के लिए अंकों के प्रतिशत के आधार पर पास किया जाता है। माध्यमिक स्तर पर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर अध्ययन करने की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। कई बार अच्छा बौद्धिक स्तर होते हुए भी छात्र परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं जिसका एकमात्र कारण उनका असंतोषजनक घरेलू वातावरण होता है। इसके विपरीत कुछ छात्र कम बौद्धिक क्षमता होने पर भी अच्छा अच्छा प्रदर्शन कर लेते हैं। उनके श्रेष्ठ परिणामों का कारण उनके पारिवारिक मूल्य हैं। छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में माता पिता का तथा पारिवारिक मूल्यों का महत्वपूर्ण रोल होता है। शैक्षणिक उपलब्धि छात्रों के द्वारा प्राप्त अंकों को संदर्भित करती है।

4. वर्तमान समय में का महत्व

बालक के नैतिक उत्थान और पतन में मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। श्रेष्ठ आचरण से युक्त छात्र सदाचार, मधुरता, धैर्य व संयमित गुणों से युक्त होते हैं। ऐसे गुण बालक अपने परिवार से ही प्राप्त करता है। अतः परिवार संस्कार की मुख्यः पाठशाला होती है। परिवार ही नैतिक शिक्षा का आधार होता है जैसे परिवार के मूल्य होते है, बालक भी वैसा ही होता है। बालक को ऐसा वातावरण प्रदान कराना चाहिए जिससे चरित्र, सदाचार, शालीनता, विवेक, राष्ट्र–भक्ति ,सत्य, अहिंसा, आदर, स्वभाव, मर्यादा पालन व परोपकार जैसे गुण विद्यमान हों। अतः यह कहा गया है कि उच्च परिवार नैतिक विकास के प्रभावी कारकों में एक महत्वपूर्ण और समृद्धिशाली कारक हैं माता–पिता व परिवार के अन्य सदस्यों के नैतिक विचार, नैतिक अनुशासन व स्नेह के अभाव में बालक का नैतिक व्यवहार प्रभावित होता है। किशोरावस्था स्वास्थ्य और प्राणशक्ति का चिन्ह है। प्रायः लोग किसी व्यक्ति की आयु पूछकर उसकी स्वास्थ्य, शारीरिक शक्ति एवं प्राणशक्ति के विषय में कल्पनायें किया करते हैं जैसे– अमुक व्यक्ति की आयु पचास को पार हो गई है अब उसमें निर्बलता होनी चाहिए, अब व्यक्ति में कमजोरी व बीमार सा होना चाहिए अथवा अमुक व्यक्ति अधेड़ आयु का होना चाहिए जिसमें प्राणशक्ति कम होगी। इस प्रकार की कल्पनाऐं जनसामान्य में आमतौर पर व्याप्त होती है। धर्मशास्त्रों में कहा जाता है कि मनुष्य में जितनी प्राणशक्ति है, वह उतना ही किशोर है। यौवन–शक्ति, जो जितने समय तक अपनी शारीरिक, मानसिक और जिन्दादिली को स्थिर रख पाता है व्यक्ति उतने ही दिन किशोरावस्था का आनन्द उठा पाता है। जिसके मन में उत्साह है, हृदय में आशा, आनन्द एवं प्रसन्नता है, जो आने वाले दिन का स्वागत करता है और उज्ज्वल भविष्य को आशा से निरखता है, वह अधिक आयु पाकर भी किशोर कहलाता है।

5. शिक्षा अधिकारियों के लिए सुझाव(Suggestion for Schools)

जब इन सभी पक्षों की ओर ध्यान जाता है तो निष्कर्ष निकलता है कि किसी एक पक्ष को छोड़कर नहीं चला जा सकता।बच्चों को विद्यालय में भर्ती करके अभिभावक निश्चिन्त नहीं हो सकते। शोध निष्कर्ष के आधार पर शिक्षा अधिकारियों के लिए सुझाव हैं

1. शिक्षा अधिकारी राज्य, सम्भाग, जिला, उपखण्ड तहसील स्तर पर अभिभावकों में अभिवृत्ति मूल्यों को विकसित करने वाले कार्यक्रमों का आयोजन करे।
2. शिक्षा अधिकारी विद्यालय के पुस्तकालयों के लिए बजट की व्यवस्था करे।
3. शिक्षा अधिकारी अवांछनीय गतिविधियों में लगे शिक्षकों को तत्काल शिक्षण कार्य से मुक्त करे।
4. आज स्वतन्त्र देश के नागरिक–युवा पीढ़ी में आवश्यक अभिवृत्ति, चारित्रिक तथा बौद्धिक गुणों का जितना विकास होना चाहिए, उतना विकास करने में आज की शिक्षा–पद्धति असमर्थ हो चुकी है।
5. मनुष्य में जब तक अपने राष्ट्रीय, धार्मिक, जातीय, सामाजिक और पारिवारिक मान्यताओं अथवा परम्पराओं के प्रति समान बुद्धि नहीं होगी, तब तक व्यक्तिगत अथवा सामूहिक उन्नति की आशा कल्पना मात्र है।

6. सारांश

सारांश रुप में कह सकते हैं कि परिवार के नैतिक मूल्यों द्वारा ही बालक में सद्गुणों का विकास होता है। बच्चे की शिक्षा का प्रारंभ परिवार से ही होता है। बच्चा परिवार में रहकर ही अपने व्यक्तित्व का विकास एवं अन्य गुणों का अर्जन करता है। स्कूल मात्र सैद्धांतिक ज्ञान देने वाली संस्था नहीं होनी चाहिए यथार्थ में इसका कार्यक्षेत्र अत्यंत व्यापक है। इसका वातावरण शिक्षकों की शिक्षण कला एवं छात्रों के व्यक्तित्व को सुगढ़ बनाने में प्रयुक्त होना चाहिए। छात्रों को अभिभावकों के द्वारा परिवार में मजबूत नींव प्रदान की जाती है। और इस नींव पर स्कूलों में महल के रुप में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को निखारा जाता है तथा महल रुपी छात्र को लोगों के द्वारा कंगूरों से सजाया जाता है। ज्ञान प्राप्त करके एक छात्र जो जन्म के समय एक असहाय, दुर्बल तथा मस्तिष्क एक कोरी स्लेट के समान था शिक्षित होकर वह उपलब्धियों के शिखर को प्राप्त करता है। भारत का प्राचीन समय शिक्षा के प्रति सदैव श्रद्धा एवं सम्मान का रहा है। प्राचीन काल से ही बालक के संस्कार पर घर व बाहर (पारिवारिक संस्कारों, मूल्यवर्धन) के अतिरिक्त शिक्षक, समाज, राजनीति, धर्म, कानून, न्याय आदि सभी क्षेत्रों में विशेष रूप से सहायक व प्रेरक रहे हैं। समय के परिवर्तन के साथ अभिभावक आज भी पारिवारिक ढ़ांचे की यथास्थिति से समायोजन कर रहा है या प्रयासरत है। अभिभावक शैक्षणिक, सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक सभी स्तरों पर उपेक्षित रहा है। अभिभावक को उपेक्षा की स्थिति से उबारने के लिए ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो जीवन के प्रत्येक पहलू की जानकारी प्रदान करे, ये वर्तमान समय की यह आवश्यकता है कि अभिभावक की दिशा में राष्ट्रीय स्तर पर ठोस प्रयास किये जायें, जिससे सभी वर्गो का संतुलित विकास संभव हो सके।माध्यमिक स्तर के छात्रों को योग्य बनाने का वास्तविक अर्थ उसे प्रगति शील और सभ्य बनाना है ताकि उसकी तर्क–शक्ति का विकास हो सके।छात्र की समस्या समाधान उसके परिवार के समुचित विकास, बेहतर समायोजन, उत्तम जीवन संतुष्टि तथा सुदृढ़ता के लिए आवश्यक है। नैतिक शिक्षा भी समाज को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता प्रदान करती है और समानता का अधिकार

प्रदान कराने में सहायक होती है। छात्र से ही एक स्वस्थ समाज का निर्माण व विकास संभव है। आज समाज के उस रूप की देश को आवश्यकता है, जो शिक्षा को परिवार की सुदृढ़ता, समायोजन, सामाजिक व आर्थिक दशा सुधारने में उपयोग में लाये। अतः स्पष्ट है कि सुशिक्षित व स्वस्थ छात्र ही परिवार, समाज व राष्ट्र के विकास एवं उत्थान में अपना दायित्व सही अर्थो में निर्वहन कर सकता है। अध्ययन के प्रस्तुत अध्याय में छात्र के सन्दर्भ में प्राचीन काल से वर्तमान काल तक एतिहासिक परिचय देते हुए समाज में उनका स्थान व योगदान स्पष्ट किया गया।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

1. आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन , प्रो. एस. पी. गुप्ता, प्रकाशन– शारदा पुस्तक भवन प्रयागराज (उ.प्र.), 2020,
2. उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धान्त एवं व्यवहार –प्रो. एस.पी.गुप्ता, प्रकाशन,, शारदा पुस्तक भवन प्रयागराज (उ. प्र.), 2020,
3. शैक्षिक एवं मानसिक मापन –बी. एल. शर्मा एवं नरेश प्रताप, प्रकाशन, शारदा पुस्तक भवन प्रयागराज (उ.प्र.), 2009
4. शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजशास्त्रीय आधार – प्रो़ रमन बिहारी, प्रकाशन, आऱ लाल बुक डिपो मेरठ (उ.प्र.), 2019
5. शिक्षा प्रशासन एवं प्रबन्धन – प्रो़ आऱ ए़ शर्मा, प्रकाशन, आऱ लाल बुक डिपो मेरठ (उ.प्र.), 2010
6. पाल, हंसराज शर्मा, मंजुलता : प्रतिभाशालियों की शिक्षा, शिप्रा पब्लिकेशन विकास मार्ग दिल्ली–110092।
7. सॉइको–लिंगवा,आगरा,जनू 2006 (2) : सॉइको–लिग्यूस्टिग एसोसिऐशन ऑफ इण्डिया ।
8. आशुतोष बिस्वाल व चिनापा, रेड्डी 2002 :''वेल्यू ऑरिएन्टेशन इन टीचर एजुकेशन।
9. द प्रोग्रेस ऑफ एजुकेशन अक्टूबर 1996 : ''वेल्यूज इन एजुकेशन'' एजुट्रेक्स अगस्त।
10. डॉसन, सुसन, ब्रोडीन, (2002) : ''हाई स्कूल ग्रेड के विद्यार्थियों का सामाजिक कौशल के लिये अधिक उम्र होने का प्रभाव।'' अरिजोना स्टैट युनिवर्सिटी।
11. न्यूमेंन, अडैल विक्टोरिया(2002):''सामान्य शैक्षिक विकास प्रमाण पत्र का सामाजिक मूल्य''शिक्षक और विद्यार्थी इसे किस अर्थ में लेते है'(पीएच.डी.)।
12. आर.,एण्ड जे.डी.ए.पार्कर,2000:दी हैण्डबुक ऑफ इमोशनल इंटेलीजेन्स, सेन फ्रानसिसको जॉसी बास।
13. शर्मा, पं. श्रीरामः भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व, प्रकाशक अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, 1998।
14. लाल बिहारी,रमन : सामान्य मनोविज्ञान, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली पृ.:36–45,व 81से 124.
15. अग्रवाल, वी.पी.राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भारतवर्ष की आधुनिक शिक्षा का आलोचनात्मक अध्ययन।
16. Why the gender gap persist in Indian Workplaces Forbes India Article April 26th 2019 by Amit Chauradia, C. Sripada and Glory George E. https://www.forbesindia.com/article/isbinsight/why-the-gender-gappersists- in-indian-workplaces/532.